

# चन्दा मामा

माघे १९६५





*Symbol of Quality Printing...*



**PRASAD PROCESS PRIVATE LIMITED**

**INCORPORATED IN INDIA OFFICES IN  
BOMBAY & BANGALORE**

जीवन यात्रा के  
पथ पर शक्ति की  
आवश्यकता है।



इनकी लाल-शर पिलाइये  
( दारु चालामृत )

डारु ( द + रु + के + मृत ) प्रोडेंट लि० अमृतसर



चन्द्रामामा

1991

विषादकोष	१
साधन का इतिहास	२
वेदक की कथा	३
भुगोलशास्त्रिणी	
विषय सूची	५
मित्र का दिवा दूधा	
कन	१७
नम्रपत्रिका का	२३
भारत का मूल्य	२७
मूल्यसूचक भाषा	२८
पंच सूत्र	३३
रामायण का भाष्य	३५
योग्यता की परीक्षा	४३
सुप्रसन्नता का भाष्य	४५
संस्कृत	५३
संस्कृत के भाष्य	६३
कोशों की संख्या	
संस्कृत भाषा	६५



मुन्नु बदल गया

姓名: 王. 明 ( )  
 学号: 1001234567  
 性别: 男  
 年龄: 20  
 籍贯: 湖南

1. 1990, 2. 1991, 3. 1992  
 4. 1993, 5. 1994, 6. 1995  
 7. 1996, 8. 1997, 9. 1998

[illegible][illegible]

(A)  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$   
(B)  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{8}$   
(C)  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$   
(D)  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{16}$   
(E)  $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{32}$



— 100 —

# प्लस्टिकले



1. **THEORY** (100 marks)  
 2. **PROBLEMS** (100 marks)  
 3. **DESIGN** (100 marks)

— ११५ —

■ ■ ■ ■ ■



बच्चों  
के लिए  
अनुपम मीठा  
एनोस्ट  
टाईनी टोट

बचत खाती की फायदी बहुत की भा-  
ना पोने की गच्छी, हरी रंग मय  
खुल से जाने के "टाईनी टोट" एनोस्ट  
"टाईनी टोट" एनोस्ट बच्चों के लिए  
की गच्छी बच्चों के लिए गच्छी के लिए है।  
अने बच्चों के लिए भाव बच्चों के लिए  
"टाईनी टोट" एनोस्ट भाव की गच्छी  
बच्चों के लिए "टाईनी टोट" एनोस्ट  
बच्चों के लिए "टाईनी टोट" एनोस्ट  
गच्छी के लिए है।  
गच्छी के लिए है।

EVEREST

TINYTOT



MINI  
TINY TOT  
Capacity 150 cc

चिकित्सी फ्लावर कम्पनी प्री. लि.  
बलदेव & कम्पनी & बाली & बलदेव





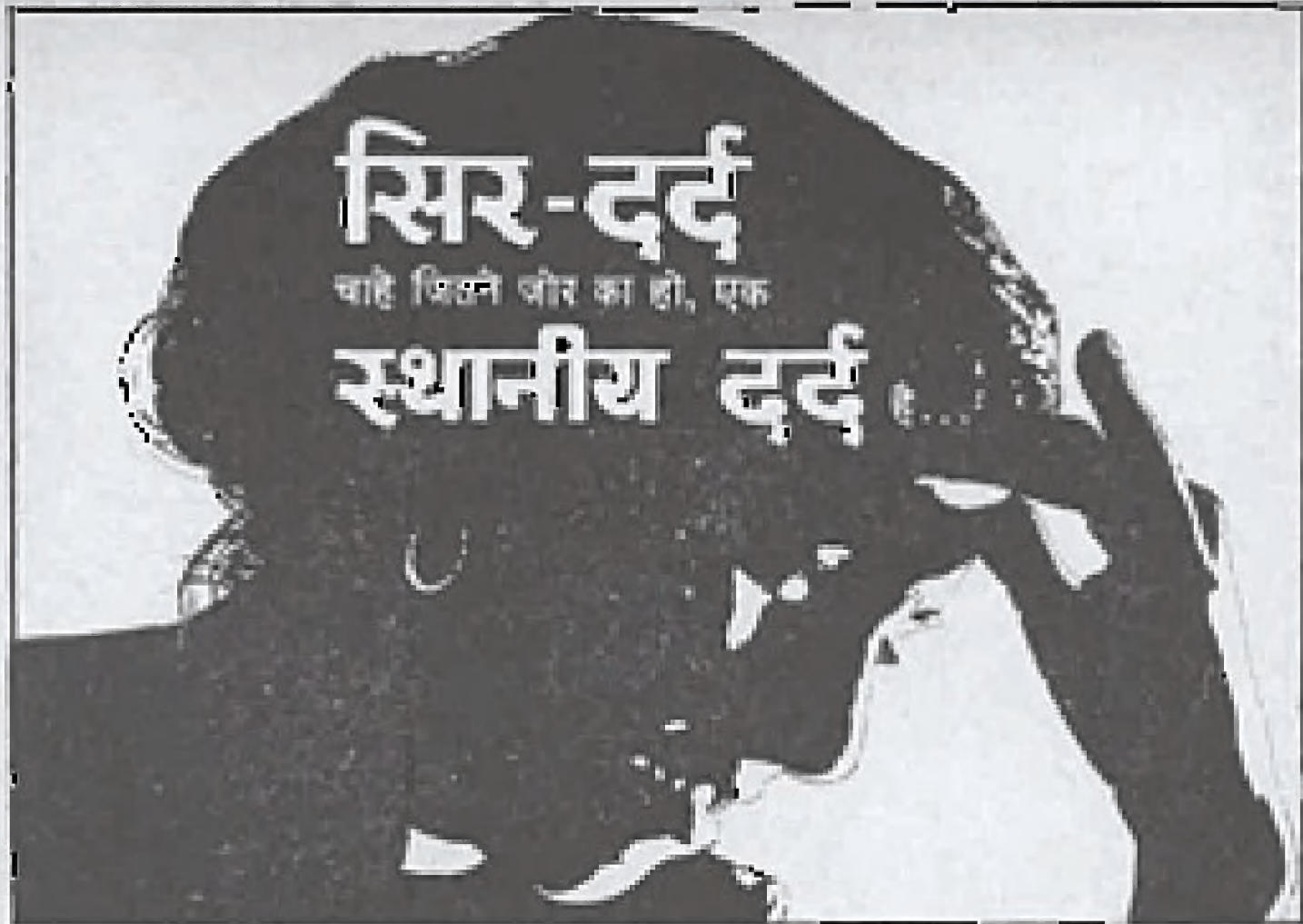


1. 2017 年 12 月 31 日，甲企业“应付账款”科目所属各明细科目的期末贷方余额如下：应付账款——A 公司 1000 元，应付账款——B 公司 2000 元，应付账款——C 公司 3000 元，应付账款——D 公司 4000 元。2018 年 1 月 1 日，甲企业“应付账款”科目所属各明细科目的期末借方余额如下：应付账款——A 公司 2000 元，应付账款——B 公司 1000 元，应付账款——C 公司 3000 元，应付账款——D 公司 4000 元。2018 年 1 月 31 日，甲企业“应付账款”科目所属各明细科目的期末贷方余额如下：应付账款——A 公司 1000 元，应付账款——B 公司 2000 元，应付账款——C 公司 3000 元，应付账款——D 公司 4000 元。2018 年 1 月 31 日，甲企业“应付账款”科目所属各明细科目的期末借方余额如下：应付账款——A 公司 2000 元，应付账款——B 公司 1000 元，应付账款——C 公司 3000 元，应付账款——D 公司 4000 元。





## स्थानीय दर्द



## असृतांजन

दर्द को फॉरवर्ड कर करता है

[illegible]

અણગમન ૧૦ દિવસનો થઈ જાય છે. — જો તેમ  
જાણનાર મેં મનુષ્ય ।



कमलाचरण लिमिटेड, मंगल - २०६ - कलकत्ता - ७०००१

▲▲▲



ऑफिस में 12 दिन झुमना जरूरी है...

टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है  
सफ़ेद कपड़ों को रंगहीन बनाता है।

आपकी आंखों पर सफ़ेद  
आवृत्ति है, वह क्यों है? ...  
हैं - इसके लिए दो कारण हैं।  
इसके लिए एक कारण है कि  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति

आपकी आंखों पर सफ़ेद  
आवृत्ति है, वह क्यों है? ...  
हैं - इसके लिए दो कारण हैं।  
इसके लिए एक कारण है कि  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति  
आपकी आंखों पर सफ़ेद आवृत्ति



टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है  
सफ़ेद कपड़ों को रंगहीन बनाता है।

सफ़ेद कपड़ों को रंगहीन बनाता है।



# सीखने में देर क्या सबेर क्या!

एक बाली महिला को बहुत  
प्रायस बहुत बड़ा लगता है।  
एक बाली मुझे ऐसा कि पुनः  
आता है।



मैंने अपने बाली को बहुत प्रभावित किया  
कि मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।

मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।

मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।  
मैंने बहुत प्रभावित किया। मैंने बहुत प्रभावित किया।



## COUPON

Please send me a sample of the product  
I have ordered from the following company:

Name \_\_\_\_\_  
Address \_\_\_\_\_





# चन्द्रामामा

संवाक्य : बाल्याजी

करने हैं, साठ वर्ष के बाद फिर वनवन आता है।  
कह नहीं सकते कि यह कहाँ तक ठीक है, या  
यह सम्भव भी है।

पर हमारे देश में प्रायः यह देखा जाता है  
कि पट्टिपूर्ति—साठवीं वर्ष गौठ, एक विवाह की  
तरह बड़े जोर शोर से मनाई जाती है।

पर पट्टिपूर्ति का क्या महत्व है,  
यह निरूपित करने के लिए हम इस अंक में  
एक कहानी दे रहे हैं।

सम्भव है, इस सम्बन्ध में और कहानियाँ  
हों, या काव्य हों। उमीद है कि यह आपको  
पसन्द आवेगी।

वर्ष : १५

मार्च १९५५

अंक : १७





# भारत का इतिहास



कुराना होना, वेदा की अपेक्षा शेरशाह  
अच्छा शासक था। उसने पाँच वर्ष  
ही राज्य किया। परन्तु उस बीते समय  
में ही उसने एक आदर्श शासन की  
ज्यवस्था की। “इस पदान ने जो शासन  
कुशलता दिखाई किसी ने की—ब्रिटिश  
सरकार ने की नहीं दिखाई।” यह एक  
साक्षात् ऐतिहासिक की राय है। मुमि  
कर की बगुली, किसानों के हक, बहा  
आदि, की प्रामाणिक बनाने के लिए इसने  
सबन्ध किये। देश की रक्षा के लिए इसने  
सभी सभी सड़के बनवाई। पूर्व बंगाल  
के सोनार बीच से सिन्धु नदी तक १५००  
कोस सभी जगहों बनवाई हुई सड़क अब  
भी है। उसने नौकों के किनारे हिन्दु  
और मुसलमानों के लिए सराये बनवाई।

“निर्बल स्थल में सोने का पैदा रसक,  
सोनेवाले की रक्षा के लिए भी उसने  
अलग रक्षण सेना की व्यवस्था की। उसके  
शासन में सबको एक ही तरह का स्वाय  
मिलता था। राज कुटुम्ब के लोग भी  
कानून से बरी नहीं थे।

शेरशाह कोई बड़े कुटुम्ब में पैदा  
नहीं हुआ था। पर स्वतंत्रता के कारण  
यह भारत के मुख्य मामलों में एक  
समझ आता है। अफसर से पहिले  
उम जैसा पदा रक्षक कोई न था।  
अफसर को शासन में जो शक्तता  
मिली उसकी नींव शेरशाह ने ही डाली  
थी। शेरशाह जल्दी मर न जाता, तो  
छाफर भारत के इतिहास में सुगत सुग  
होता ही न।



शेरशाह के साथ वह अफगान साम्राज्य, जिसका उसने पुनरुद्धार किया था शिथिल हो गया। चारम्परिक कब्ज़ और अराजकता फैलत हो उठी। शेरशाह के बाद उसका सड़का सलीम शा सुल्तान बना। वह भी पिता की तरह समर्थ था। वह भी मर्त्य ही १५५४ नवम्बर में मर गया। उसके नाबालिग बेटे को उसके मामा आदिलशाह ने मरवा दिया और वह स्वयं सुल्तान हो गया। वह आदिलशाह समर्थ नहीं था। उसके समय में अफगान साम्राज्य विच्छिन्न होने लगा।

यही हुमायूँ के लिए अच्छा मौका था। वह पन्द्रह वर्ष बिना कहीं आसरा वाले बूझता रहा। उसके माइनों ने उसकी मदद न की। सबसे बड़ा मातृ छोड़ी कामरान था। उसने अपने भाई की सैनिक सहायता को भी ही नहीं। उसके कंधों में भी उसने उसको कोई मदद न दी।

हुमायूँ के पास बहुत से शरणाधीन समा हो गये थे। परन्तु उनके खाने-पीने की भी कोई व्यवस्था न थी। सिन्धु घाट में छावनी बनाकर, फिर हुमायूँ ने अपने साम्राज्य को खाने की चेष्टा की, पर वह अपने प्रकृत



में सफल न हुआ। सिन्धु राखनर का सुलेन की शक्त ने इसमें इत्तल दिया।

१५४२ के अन्तिम महीनों में, जब हुमायूँ सिन्धु के रेगिस्तान में घूम रहा था, तब उसने इमीदा बेकम से शादी की। वह दोल जलि अम्बर बैनी की सड़की थी। राजपूत राजा उसको आश्रय देने में हिचके। वह नमरपोट गया। वही के राजा का नाम राजा प्रसाद था। उसने पहिले हुमायूँ को बचन दिया कि वह बहुत और हाकर राज्य जीतने के लिए मदद देगा, पर मन्त में उसने कुछ नहीं किया कराया।



१५४२ नवम्बर २३ को, जमान खोर में अफगन पर जन्म हुआ।

यह सोचकर कि उसे भारत देश में कहीं मदद न मिलेगी हुमायूँ परास्त गया। वहाँ उसने शाह बहमाम्म की कदाम्ता पंथी। उसकी बातें थी कि हुमायूँ शिया बने और लिखने का कन्धार का मान्य उसे दे दे। फिर उसने १४,००० की सेना उसे दी। अपने पिता की सहा, हुमायूँ को भी फारसी सेना की मदद में भारत आभवा पड़ा।

१५४५ में बन्धार, परदुख हुमायूँ के कब्जे में आ गया। परन्तु उसने बन्धार कागम को नहीं मौरा। बन्धार को लेख, फारसी और मुगलों ने कुछ नू नू पै पै भी हुई। बन्धार को कैद कर लिया गया। उसे बन्धा करके गवा नैज दिया गया।

बन्धारी को भी गवा नैज दिया। हिन्दाल कहीं कहीं से मारा गया।

नवम्बर, १५५४ में हुमायूँ, फिर हिन्दुस्तान को आने निवत पड़ा। १५५५ फरवरी में काहीर, मुगलों में रिती और जामना, हुमायूँ के बंध में आये। उन मामलाय का कुछ भाग, जिसे यह अपनी कापरवाही से लो बैठा था, फिर अपने जीत लिया।

फलों के कारण, उसकी मनोवृत्ति बिना कुछ बदल गई थी, वह जानने का समय ही न मिला। २२, जनवरी १५५६ में यह दिल्ली में, अपने पुस्तकालय की सीढ़ी से उतरता अचानक चित्त गया और मर गया। १४ फरवरी को, जमान को १३ वर्ष की अवस्था में ही मुल्तान घोषित किया गया।





## नेहरू की कथा

[ ८ ]

ब्रिटेन द्वारा घोषित सुधारों के प्रति कोन्ग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ही अमानुष रहे। इन सुधारों के बारे में चर्चा करने के लिए बम्बई में १९१८ अगस्त में ही विशेष सभा बुलाई गई, उसमें ज्वाहरलालने कोई भी उपस्थित हुए। इन सुधारों पर, जिन्होंने सर्वर्षन किया, उन्होंने जाकर अपनी असम्यक्ता बना ली।

यह सुधार जो लैर में ही, इस बीच एक और बात भी हुई। देश में राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़ता जाता था, राजकीय कमियुक्तों की कैले सुनवाई हो, इस सम्बन्ध में सलाह देने के लिए सरकार में एक समिति बनाई, जिसके अध्यक्ष जस्टिस रोलेट नियुक्त हुए। रोलेट की रिपोर्ट उन्हीं दिनों प्रकाशित हुई थी उनका करान्तर्ग बढ़ा बढ़ित था। उनके आधार पर ही कानून भी बनाये गये। ये कानून १९१९ फरवरी में महारुद्र की समिति के तीन मास बाद घोषित किये गये।



रोलेट कानून में आग को हवा मिली। देश में सन्नद्धता मच गई। इसके कारण गांधी जी राजनीतिक क्षेत्र में आगे आये। मोतीलाल जी ने भी उनके कारण अपनी ज्वाहर नीति कुछ अंश तक छोड़ी। जब सरकार ने सुधार उद्घोषित किये, तब उन्होंने उनके बारे में अपनी कुछ कुछ सहमति भी सूचित की। ज्वाहर जी ने उनका विरोध किया, परन्तु रोलेट कानून के बारे में उनमें कोई मतभेद न था।

“अब क्या किया जाए” कोन्ग्रेस के सदस्यों ने पूछा।





“क्या किया जाय। जब वे भयानक में लगे जायें, तब हम सत्याग्रह शुरू कर देंगे।” गान्धी जी ने कहा।

पर गान्धी जी ने हम सम्बन्ध में कोई आज्ञाकारन नहीं दिखाया। उन्होंने उन कानूनों को बाधित लेने के लिए साहसराज की लिया। साहसराज ने गान्धी जी की बात नहीं सुनी। गान्धी जी स्वयं न थे, फिर भी वे सत्याग्रह समा के लिए मरस्य बनाने लगे। सत्याग्रह समा के मरस्यों को रोलेट कानूनों को छोड़कर, जेल जाना था।

इस कार्यक्रम से जवाहरलाल नेहरू विद्वाने ज्ञातहित हुए, जतने ही बोलीलाल निरुत्साहित हुए। उन्हें जेल में लम्बे गैराना, गैराना न था। जब उन्हें मान्यन हुआ कि जवाहर जेल जाने के लिए उक्त वे उन्होंने तुरत गान्धी जी की जवाहरवाद जाने के लिए निमन्त्रण भेजा।

गान्धी जी जायें। उनसे जवाहरलाल के सम्बन्ध में बातचीत करने के बाद गान्धी जी ने जवाहरलाल से कहा—“तुम जन्दी में कुछ न करी। अपने पिता की श्रेष्ठ मत पहुँचाओ।”

रोलेट बिल को साफल्य में कानून बनाने की ठानी। गान्धी जी ने घोषणा की, कि सर्वत्र उनके विरुद्ध एक दिन हड़ताल की जाये। पहिले ३० मार्च सत्याग्रह के लिए निश्चित किया गया। पर उसके बाद यह तिथि ६ तैरक कर दी गई। उस हड़ताल को सफल करने के लिए जवाहरलाल ने अपनी सारी सक्ति लगा दी। कोन्मेस ने भी कल्पना न की थी कि यह सत्याग्रह का दिन इतना सफल होगा। न सरकार ने ही सोचा था।





मान्धी जी ने पहिली बार स्पष्ट रूप से दिखाया कि वे फिलम्मी अच्छी तरह जनता के मन को समझते थे। विदेशी हुकूमत की हिरान ख गई। सारे देश ने जो आन्दोलन छोटी छोटी तरंगों के रूप में शुरू हुआ था वह बड़ी बड़ी तरंगों में परिवर्तित होकर फलफूल हो गया।

३ माहस कबो सत्ताप्राप्त के स्थिति होने की सूचना मिली नहीं पहुँची। दिल्ली के नागरिकों ने ३० मार्च को ही सत्याग्रह किया। आन्दमी चौक में हिन्दु मुसलमानों में एक होकर विदेशी सरकार के विरुद्ध चरना आउन्तोच फूट किया। हुकूमतें बन्द कर दी गई। उस आमा मस्जिद में, जहाँ कभी औरमाजिब गन्नाज पड़ा कानना था एक आजीब बात हुई। स्वामी अहमद नानक एक हिन्दु सन्तानीने मुस्लिमों के मस्जिद वहाँ स्थापन किया। इसमें ब्रिटिश और विषय उठे। सैनिकों की सार से जहाँ जहाँ धीक देसी, उगे सितर सितर कर दी, कहीं कहीं गोली भी चलायी।

४ एप्रिल की जब सत्याग्रह हुआ, तो कई धान्यों में कोलीस और सौज ने



गोलियों छोड़ी। पंजाब में लखौर और अफतखर में विशेषतः लोगों ने हिंसा का जवान हिंसा से दिया। कई घर जला दिने गये। रंगे कलाह हुए। जमिनों पर हमले भी हुए।

बम्बई में दिल्ली जलते समय आठ अप्रैल को मान्धी जी फिरफार कर सित गये। परन्तु उनको बम्बई में आमा गया और वहाँ वे १० अप्रैल को छोड़ दिने गये। परन्तु गिरफ्तारी की सार के कारण बम्बई और अहमदाबाद में गड़बड़ी नच गई।





१५ जून को पंजाब में मार्शल ला घोषित किया गया। अंग्रेजों द्वारा ने ज़िम्मादारों को पकड़ लिया। तब तक, जब तक मार्शल ला हटाया नहीं गया, तब तक पंजाब के लोगों पर कोई सम्बन्ध नहीं किया गया। १९५७ के बाद ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध कभी इतना तेज भारतीयों में नहीं उमड़ा था।

और विविध बातें थी, जिनमें से के कारण यह सब हो गया था, उसका किसी भी सम्बन्ध में नहीं था उपयोग नहीं हुआ।

पंजाब दम्पकान्त के बारे में ब्रिटिश सरकार को खोज करवानी ही पड़ी। लार्ड हम्फ्रि के नेतृत्व में चार भारतीय, चार ब्रिटिशों ने मिलकर खोज की और दो रिपोर्ट उन्होंने पेश की। दोनों में ही

अंग्रेजों द्वारा की वृत्ति दिखाया गया। अंग्रेजों द्वारा को मेला में निष्कारण इन्फेन्ड मेला गया। वहाँ कई ने उनके "पराक्रम" के लिए उसको सोने की तलवार भी दी। भारतीयों की विद्रोही नहीं न हुई।

इन घटनाओं के कारण भारतीयों की गान्धी और अंग्रेजों से भागने। तब से एक कदम भी कभी पीछे न रखा, हमेशा स्वतन्त्रता संग्राम के घोड़ाओं के सम भाग में ही रहे। भारतीयों को देश के आन्दोलन के प्रति कोई विशेष आकर्षण न था। हमने कोई सम्बन्ध नहीं कि देश प्रतिनिधि अपने इच्छाओं के पुत्र के साथ रहने के लिए ही, वे स्वतन्त्रता घोड़ा बन गये थे। इनके साथ हर किसी को सम्बन्धित करनेवाला कुछ करनेवाले गान्धी जी का पंजाब भी उन पर था।











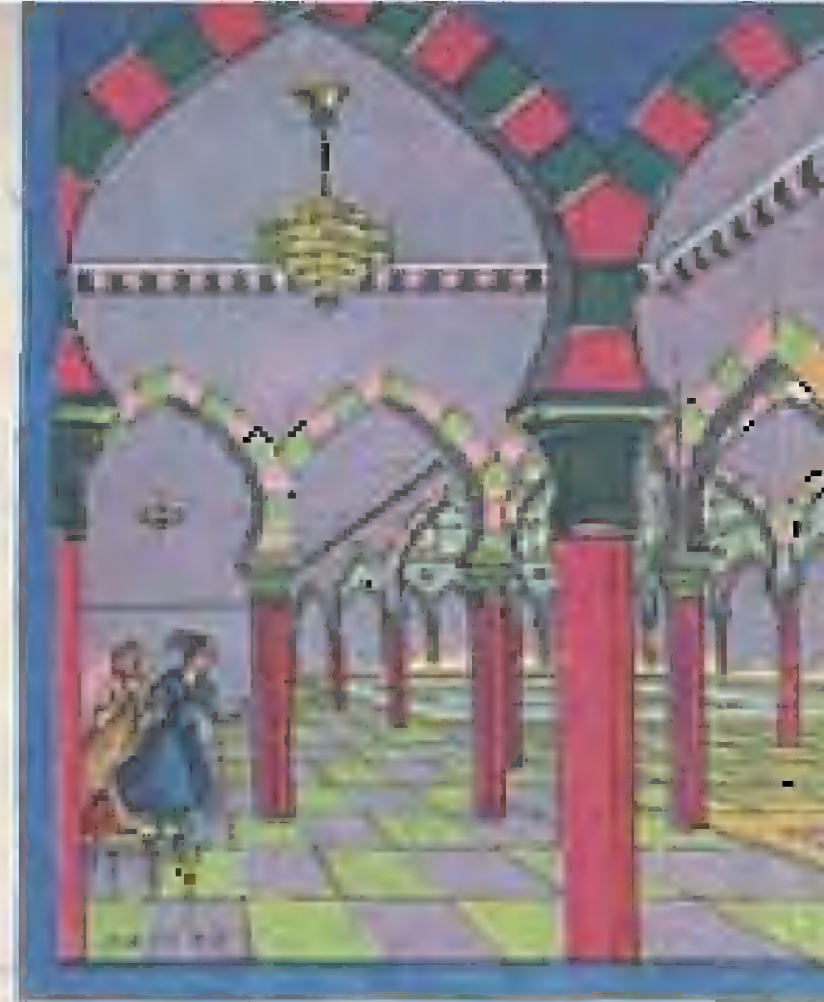












इसका मतलब यह था कि यह देश के बड़े भाड़े का लालच था, इसलिए राजपूताने ने इसको अपने जमाने की छद्म मित्रता छोड़ दी। तब ही सादर से विचार हुए कि हमारे का किनारे पर अधिकार न था। हमारा कौ भी न था।

विगतों में जीवनी हो, एक-एक के  
 दाख-खानों में, बाग-बाग में, बगीचा  
 में ही। उनके चढ़कर, उड़ान में आने से  
 कदा-कदा बगल-बगल होने के  
 श्रेष्ठ मनन-मनन है। इनमें, उड़ने की  
 दशा-दशा में।

शरीर न जब तक चमकता है तब तक शरीर में जीवन नहीं है।

“इसके लिए, अत्यंत कम व्ययों के ही  
कोई देना” इसी के कारण है।

उन दिनों अनाथ बंने आशुभा बंने एक  
आना में एकदम एक-दूसरे के बहुत डरना  
में हुए थे। किन्तु अब विनय को अपने  
माँ के होते

“... ॐ नमः शिवाय ॥” इत्यादि । वि-  
शेषः ।

॥ माता लक्ष्मी जी प्रसाद से ही  
 सब बनाने में मैं सहायता करूँगी ।  
 हे भक्तजन ! यदि तुम्हारे मन में  
 कोई कष्ट है, तो उसे मैं ही दूँगी ।

" 210-2 "

“... 1999”

“—[अनन्तर] मैं कहती हूँ कि यह हमें सचमुच में सही है। उन्होंने निश्चयपूर्वक ही यह सही है। मैं विश्वकोर का हूँ। बिना अन्तःकरण के हमारे लिए इसे सही मानना है और नहीं है। मैं आपको इसका दूसरा वर्गीकरण कर रही हूँ। यह सही है।”

















## मिथद का दिया हुआ फल

विकल्पों ने उस न छोड़ा। धीरे धीरे उस  
 गया। धीरे धीरे उस को उत्तर  
 गया पर वह वह हमेशा की तरह  
 हुआ था हमेशा की ओर चलने लगा।  
 वह उस ने सिखाया था कि—“हो  
 कम हुआ वह रहे हो वह हीन है या  
 समान, वह तो मैं नहीं जानता हूँ। परन्तु  
 कभी कभी समान काम करने के लिए भी  
 धीरे धीरे समान रूप से भावना है  
 हमारे अज्ञान के रूप में तुम्हें मिथद  
 की कदमी सुझाता हूँ। तुम्हें समान न  
 मानते होयों, तुम्हें।”

पहिले कभी भार्गव धर्मा नाम का धर्मा  
 मानता रहा करता था। उसकी धर्मा का  
 नाम भार्गवनी था। उनके बहुत दिन तक  
 मानता न हुई। उनको वह फल ही कि  
 कोई तर्क करने उनको नरक में नहीं

वेताल कथाएँ





बनायेगा। मार्गरेष्ठी भी अपने बरतन पर विनम्र थी।

जब एक सिद्धपुरुष उनके नगर में से जा रहा था, तो मार्गरेष्ठी उसी को लिखाई दिया। तब मार्गरेष्ठी ने अपनी राजन के बारे में उससे कहा और पूछा कि उसके माय में सम्मान भी कि नहीं। सिद्ध ने उसका हाथ देखा-कहा—“क्यों माई सम्मान के लिए छटपटाये हो? तुम्हारे इस जन्म में सम्मान नहीं है, दान-धन कमाने हुए जीवन भिनाभी।”

“म्हामी, अगर आप जैसे सिद्ध पुरुष संकल्प कर लें, तो माय भी बदल सकता है। आप कुत्ता करके हमें एक लड़का दिलावाइये....” मार्गरेष्ठी ने कहा।

सिद्ध मान गया। उसने एक आम लिया। उस पर दन्त पड़ा और मार्गरेष्ठी को दे दिया। “इसके खानेवाले को सर्व पुनसम्पन्न पुत्र भी प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी को बड़ा बीमार खाने के लिए कहो।” वह गड़क-गड़क कर चला गया।

मार्गरेष्ठी बड़ा खुश हुआ। उस चूल्ह के साकल उसने अपनी पत्नी को दिया। “इसे खाने से एक सुपुत्र मिलेगा। वह एक सिद्ध ने दिया है इसे खाने करके सभी।”

मार्गरेष्ठी जब वह रात अपनी पत्नी से बात रहा था, तो पड़ोस की श्री आदिरक्ष्मी ने उसके घर आने सुना। उसने पति के दिने हुए आम को पूजा के कमरे में भी रखते देखा। फिर आदिरक्ष्मी अपना काम निरटाकर चली गई। दर जाने जाने वह पूजा के कमरे में से आम भी उठाकर चली गई।

आदिरक्ष्मी के आम उठाने पर वह राजन था कि क्यातार उसके साथ कड़कियाँ



हुई थी। उसके को उसकी हथ्थी पूरी न हुई थी। उसने मार्ग्य को, अपनी गली से पड़ने भुना था कि उस भाग के लाने से कुछ पैदा होगा। स्वयं कुछ करने की अभिलाषा से उसने उस फल को भुरा लिया था। उसने घर जाने ही स्नान किया और बिना गिरणी को रूतिन पक सा भी लिया।



मागवेणी ने जब जगले दिन स्नान करके फल लाना चाहा, तो पूजा के कपड़े ने फल न था। बहुत खोजा। पर वही कोई फल न मिला। उसे घर लाने लगा कि रति क्या सोचेंगे, जब आपको माहम होगा कि फल लो गया था। वही दीवधन के बाद फल ने लाने से। वही उसके गुन होने के बाद में माहम होने ही, उनके हृदय की भावना न रुक रुक करे। इसलिए मागवेणी ने अपने रति से फल दिया कि उसने फल ला लिया था।

मागवेणी के कह इसके दूर न हुए, पर लमी हुए हुए थे। सिद्ध के दिने हुए फल के लाने के बाद उसकी गर्भवती होना था और जो गर्भवती बनेगी, उसकी माँ भी बनना था। कुछ समय बाद मागवेणी ने

लोगों में कहा कि वह गर्भवती थी। उसके भाई कम्पु बड़े सन्तुष्ट हुए। बहुत दूर से उसकी छोटी बहिन भागीरथी उसकी देखने आयी। मागवेणी को माहम हुआ कि भागीरथी को भी तीन मास पर गर्भ था। उसने अपनी बहिन को बताया कि वह किस सन्तान में थी। “यदि मुझे इस संकट से बाहर करना है, तो जो बच्चा तुम्हें पैदा हो, वह मुझे दे देना और वह किसी को न माहम हो।” उसने कहा।

“यदि मेरे रति लान जाये, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।” भागीरथी ने कहा।







जादि सब मित्र था । वह मित्रता होते पर छोड़ दिया, एक बीच स्त्री के साथ  
 होते और भी बानी गई । गांधी बुद्धिमान रहने लगा ।  
 विवेकी, विनीत और सदाचारी था । गान्ध  
 नहीं था । दुष्ट था और वे सफल करने  
 ही जाते थे । अर्थात् शर्म को सिद्ध के  
 बलात्कृत हुए गुप्त पदों के साथ में न  
 दिखाई दिये, पर अपने लड़के बरत में  
 चित्तवृत्त न विरगई दिने । बरत ने पहिले  
 को घर में बोरी करने दूध की, फिर और  
 के घर भी बोरी करने लगा । निता ने  
 उसके बहुत सुधारन कर। पर वह  
 विरगता ही गया । अन्तिम, उसने अपना  
 पर छोड़ दिया, एक बीच स्त्री के साथ  
 रहने लगा ।  
 कुछ दिनों बाद बरत बीमार रहा ।  
 उसको उस स्त्री ने भगा दिया । कई दिन  
 वह भूखा प्यासा, अंगणों और पार्श्वों में  
 भ्रमता-पिडना रहा । फिर वह अचानक में मर  
 गया । क्योंकि करने समय उसकी इच्छा  
 पूरी न हुई थी, इसलिए वह विमान बन गया ।  
 वह अभी अभी पिशाच बना था,  
 इसलिए और पिशाच उसको अपने समक्ष  
 के पास में गये । पिशाचों के नाटक ने  
 उसे देखकर कहा—“सुभागा इस प्रकार





विश्राव हो जाता—केवल तुम्हारी ही गल्ली नहीं है। इसके लिए वो बहुत जिम्मेदार है, गुन उसे बख़्शकर सुनाओ।”

बेताब ने यह कहानी सुनाकर पाठा—  
“राजा, विश्राव बाद को कितने मनामा चाहिए : धन के लालच में अपने लड़के को अपनी बहिन को देनेवाले मनीषी को : या नागवेनी को, जिसने उसको अपना लड़का मानकर, उसको पासा-बोसा था : यदि तुमने इन सन्नेहों का जानबूझकर निवारण न किया, तो तेरा छिर डुफड़े-डुफड़े हो जायेगा।”

इस पर विक्रमार्क ने कहा—“बरद के विश्राव हो जाने का कारण भागीरथी न थी। उसने अपने लड़के को श्री-नम्पलिकाल के घर में गोद दिया था। हाथों-छोई गल्ली नहीं है। कुटुम्ब में उसे दूध देख, उसने

अपना मातृ पर्व भी निभाया। बरद, अपने घर में बड़ा होने के कारण, धर्मियों के घर बड़ा होने के कारण, कई महत इच्छाओं के साथ भर गया और विश्राव हो गया। नागवेनी के दोष ने ही उसे ऐसा बनाया था। पर गल्ली नागवेनी की भी न थी। उसके पति फिलभी ही भाशा से कुछ हाथ थे। उसके गुन हो जाने की बात सुनकर, नहीं उनके पाप न होते जाये, वह सोचकर ही उसने बरद का पोषण किया था। बरद के विश्राव होने का असली कारण आदिन्द्रसी का सिद्ध कर दिया हुआ काम चुराना था। विश्राव को उसे ही लेना करना चाहिए।”

राजा पर इस प्रकार भीम भंग होने ही बेताब सब के साथ भरसक हो गया और फिर देह पर वा सवार हुआ।







## मन्त्रवाला कान

जापान देश में एक युवक था। एक बार जब वह समुद्र के तट पर खड़ा रहा था, तो उसने एक गोड़े में एक मछली को छतपटाते देखा। वह जगह में झुककर जा गई थी और कैसा गई थी, वापिस नहीं आ पा रही थी।

युवक को उस मछली को देखकर दया आई। उसने उसे उठाकर समुद्र में डाल दिया। वह समुद्र होता कि उसने एक प्रार्थना की मन्त्रवाला की थी, वह जा रहा था कि किसी ने पीछे से बुझा, “कम छहरी।”

जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो एक श्री दिखाई दी। चूंकि उसने उसको पहिने नहीं देखा था, इसलिए वह सोच कि वह किसी और को बुझा रही थी, जाने चले दिया।

“तुम्हें ही बुझा रही हैं। कम छहरी....” श्री ने फिर बुझाया।

वह जाधर्म करता था। उसने उसके पास गया।

“समुद्र के राजा ने मुझे मेरा दे। उसकी एक लक्ष्मी की धन तुमने बचाई है। मुझे तुम्हें जाने देना से जाने के लिए उन्होंने मेरा दे। कृपा करके मेरे साथ आओ।” उसने कहा।

“मुझे तो तेरा नहीं जाता है। समुद्र राज्य में कैसे जा सकता है।” युवक ने कहा।

“तुम इस बात के लिए न डरो। मैं बस्तुतः मछली हूँ। मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँगा।” उसने कहा।





ये दोनों जब धुत्ने घर पानी में गये, तो वहाँ भी एक बड़ी गड़बड़ी बन गई, जबकि उसकी पीठ पर नकार हो गया। समुद्र राजा के घर के शस्त्रों ने उन गड़बड़ी ने कुछ से कहा—“समुद्र राजा यदि तुमने कोई घर गड़बड़ी के लिए रहे, तो कहना कि मन्त्रालय कान के सिवाय और कुछ नहीं चाहिए। बूँट-तुमने अपनी गड़बड़ी के साथ बचने हैं, इसलिए वह कुतूहल में उसकी तुम्हें देगा। अब तुम उसे कान में रखकर सुनो, तो सभी जानिबों की भाँसा समझ में आ जायेगी।

समुद्र राजा ने सुनकर का लूट आनन्दित किया। रात की रात में हुए। सुनकर समुद्र राजा का कुछ दिन अनिचि रहा, फिर उसने कहा कि वह अपने घर जाँसा गया चाहता था, जब समुद्र के राजा ने कहा—“तुम हमारे खोफ में से जो चाहो, उसे मँगो, ये खोफ में दे दूँगा।”

“मुझे मन्त्रालय कान के सिवाय कुछ नहीं चाहिए।” कुछ से कहा।

“समुद्र में क्या एक ही एक है। फिर भी तुमने मँगा है, तो इसलिए उसे दे देता हूँ।” दरबार उसने दा. जाने में उसे कान को उठाकर उसे दे दिया। जो मन्त्रालय उसकी का. खाया भी, वह ही उसकी घर पर ले गई।

कुछ समुद्र के बिगारे पैदा था कि उसकी कुछ बिगड़ियाँ का. बहकता. सुनाई दिया। वह जानने के लिए कि वे क्या करने कर रहे थे, अपने खोफ के समान उस मन्त्रालय कान को फल में रखा। तुरंत वह जान गया बिगड़ियाँ क्या कर रही थीं।

मनुष्य सोचते हैं कि वे बड़े बुद्धिमान हैं, पर वे कुछ नहीं जानते जानते।



सासबाले मन्त्रों में एक वाक्य है जिस पर ही कौन्हीं का "काँच काँच" करना  
 संग है टेककर साथ पार करते हैं, मुनाई दिया उसने मन्त्रबाले ज्ञान को  
 पर शुद्ध माने का है, परन्तु वह कोई ज्ञान में रसकर मुना ।

मन्त्रों को "मन्त्र" निरूपित है । जाने कहीं  
 मन्त्रों से वैद्य मुलाये गये, पर एक भी  
 मन्त्रों की मन्त्रों को डीक न बन  
 मन्त्र । किन्तु डीक करेगा : नर, दत्त-शक्ति  
 में डीक होने-तरी चीन्हा की गयी है ।

मन्त्रों के पर ही उन २२ वक्की  
 ना गयी थी, न कृष्ण के साथ एक साथ  
 की मन्त्रों में कोई मन्त्र न था ।  
 मन्त्रों के पर ही उन २२ वक्की  
 ना गयी थी, न कृष्ण के साथ एक साथ  
 की मन्त्रों में कोई मन्त्र न था ।

मन्त्रों के पर ही उन २२ वक्की  
 ना गयी थी, न कृष्ण के साथ एक साथ  
 की मन्त्रों में कोई मन्त्र न था ।





नहीं देता, जब तक तमीन्दार की लड़की  
टीक न होगी।" ये कौन्से बापस ने  
बाते कर रहे थे।

यह सोच कि अच्छा हुआ उसने यह  
सुन लिया था। वह सीधे तमीन्दार  
के घर गया। घर के बाहर खिन्ना  
था — "जो मेरी लड़की की बिकिन्ना  
करेगा, जो वह चाहेगा, वह दिया  
जावेगा।"

बुधक ने जम्हर जाकर कहा — "मे  
रोगी लड़की की बिकिन्ना करेगा।"

यह एकदा हुए बीच टहा मारकर देसे :  
"हम जिस बीमारी का पता न लगा सके,  
वह वह मूर्ख टीक करने जाया है।"  
वे जालस में कानाफूसी करने लगे।  
परन्तु तमीन्दार, जो कोई नया जाल  
उमने ईसाद करवाना

बुधक ने जम्हर जाकर रोमी को देखकर  
कहा — "यह रोग नहीं है, घात है।  
जीव दिमाग दुर्दे है। घर की छत पर  
बांध केना पड़ा है।"

तमीन्दार ने अपने बीचों की बुझाकर  
छत हटावकी। मर्ग एक बीस में था।  
वह मूल के कपण सरा का रहा था।  
उमने लुहाकर दूध दिया गया। वह दूध  
बीचर रेंगने लगा। जब वह एक कदम  
रेंगा, तो तमीन्दार की लड़की की बिल्लरे  
पर उठ बैठी। जब वह दो कदम रेंगा तो  
वह उठ लगी हुई। जब मर्ग अपने गल्ले  
बन्ना गया, तो तमीन्दार की लड़की की  
बीमारी भी जाती गयी।

बुकि लड़की पर उमने ईसाद किया  
का, इसलिये तमीन्दार ने उस बुधक पर  
अवधी लड़की से लंबाण कर दिया।







## शरीर का मूल्य

सुदपगिरि का राजा उदयसेन बड़ा धर्मात्मा था। राजा के कुछ मन्त्रों के लिए, अपने बहुत-ही व्यवसायों की किसी को भी भील मँगाने की कोई जरूरत न थी। राजा के इन प्रयत्न करने से, राज्य में भील मँगाना बहुत कम हो गया था।

उस देश के भिखारियों में एक सुबक था। जब से उसने होश सम्पादन था, उस से वह भील मँगाने की जीवन निर्वाह करता आया था। भिखारियों को लोगों ने देना कम कर दिया था, इसलिए होने होने, उनको अपनी स्थिति बड़ी कठिन मान्य होने लगी।

एक दिन सुबेरे से सुबक लड़क, किसी ने उसको कोई भील न दी। मूला, वह राज्यार्थ के एक पेड़ के नीचे बैठकर, जाने

जानेवालों से भील मँगाने लगा। पर किसी ने उसकी ओर न देखा। मगवान की धार्यमा करने से ही लायक लोगों की नजर उस पर पड़े, वह मोचकर, वह गया पड़कर चिलाने लगा—“हे मगवान, शरीर को मुड़ी भर दो, आच्छादके, मुझे को एक और भव, दयागमे, मनाने को कुछ दान...”

तब भी किसी ने उसकी न सुनी। मूला, तो था ही किता-बिनाकर, वह बेरोमा भी होने लगा। उसे मगवान पर गुस्सा आया। “अरे मगवान! कहाँ नर गये ही पड़ते हैं, जो पैदा करता है, क्या वह माने को नहीं देगा। पैदा किया है, क्यों नहीं सिखाने हो। तैरी माँ का पैर पड़े...” वह मगवान को ही गालियाँ देने लगा।



इसी समय राजा, राजाजी से होते पर  
 लड़ा होकर जा रहा था। उसने भगवती की  
 आज सुनी। "मैंने जो कहा।" राजा,  
 "मैंने पता दूँगा।" "मैंने जो कहा।"  
 "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

एक दिन मुझे दे दो, मैं तुम्हें दूँगा।  
 मैंने जो कहा। मैंने जो कहा। मैंने जो कहा।  
 मैंने जो कहा। मैंने जो कहा। मैंने जो कहा।

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"

"मैंने जो कहा, पढ़िए। मैं, मैंने जो  
 कहा।" "मैंने जो कहा।"









राजा की चर्चितपूर्ण आज्ञा लोगों को ने कहा कि जो आने कहा था, उसे बड़ी बुरी लगी। वे लोग की इस आज्ञा पर विमर्श करने लगे, जिसके पिता अभी माट के नहीं हुए थे। यह देख मन्त्री ने राजा से कहा—“महाराज, आपकी आज्ञा के अनुसार देश का चिह्नना अधिक बज्जान हुआ है, यह तो नहीं कहा जा सकता। जन और अनुभववाले अब जल्द मर रहे हैं, जो सुबको की लोक रास्ते का ले जानेवाले नहीं रह गये हैं। इसलिए, बड़ी दानि हो रही है।” राजा ने इस बात का विचार नहीं किया। मन्त्री

ने कहा कि जो आने कहा था, उसे वह सिद्ध करने दिखावेना। उसकी सलाह पर राजा ने एक घोषणा करवायी। राज्य में हर किसी को राज्य में बर्बाद गई रस्सियों को जाने के लिए कहा गया।

राज्य की रस्सियाँ कैसे बनायी जायें? किसी भी नागरिक को न पता लगा। उस व्यक्ति ने जिसने अपने पिता की आदरी का पुरा रखा था, उससे पूछा—“राजा की आज्ञा हुई है कि राज्य से बर्बाद हुई रस्सियाँ काटे जायें, यह कैसे सम्भव है?”





“रस्मी को राजा को बस करवाइये।” मन्त्री ने नागरिकों को देखकर उसे दौड़े ही ने जाकर राजा को एक और दखला दी।

दिसा था “पिता ने कहा था।

“देश के सभी नागरिक, राजा के कोने

उसने पिता के बड़े अनुसार रस्मी में से जाता निवाला राजा को जाकर बसाकर, राजा को जाकर दिसापी। राजा दिसाये।” घोषणा की गई।

मे वह क्या भीर कोई न कर गया।

यह पिता अगर किया था सचता था,

“बाह. तुम बड़े महानन्द हो।” राजा

कोई न जान गया। उस युवक ने, जिसने

ने उसकी वशेष करके उसको मेज दिया

पिता की लुका रखा था, फिर पिता ने

फिर उसने मन्त्री से कहा—“देला,

सकल धर्मी।

अहमन्दी क्यों मैं ही नहीं, युवकों में भी है।

“बेटा, एक छोटे से बागल की एक

“यह जानने के लिए कि यह अहमन्दी

जानते लाने से बंध हो और उसे एक

युवक की थी कि नहीं, एक और घोषणा

बाड़ी की दे दो। फिर उसे राज में राज





हों : वह शीघ्र के छेद में से बाबल के साथ बाहर निकल आयेगी। बाबल का सामना भी बन जायेगा; फिर बाबल को तामे से लोहा देना और लोहा को ले जाकर राजा को दिनाकर देना।" विना ने कहा।

युवक ने जैसे शिला ने कहा था वैसे ही विना। तामे के कपड़े लपेटे शीघ्र के ले जाकर राजा को दिनाकर, निम्नलिखित उसके कोई और मद करके दे दिया था। राजा युवक को देखकर बड़ा खुश हुआ।

"मगर क्या उद्योग, राजाजी यह ही राज्य की रानी मर गई थी। ये दोनों बच्चे हमने अपनी जगह से किये हैं, ये सब बाबल के लिए दिया जाता है।" बाबल ने कहा।

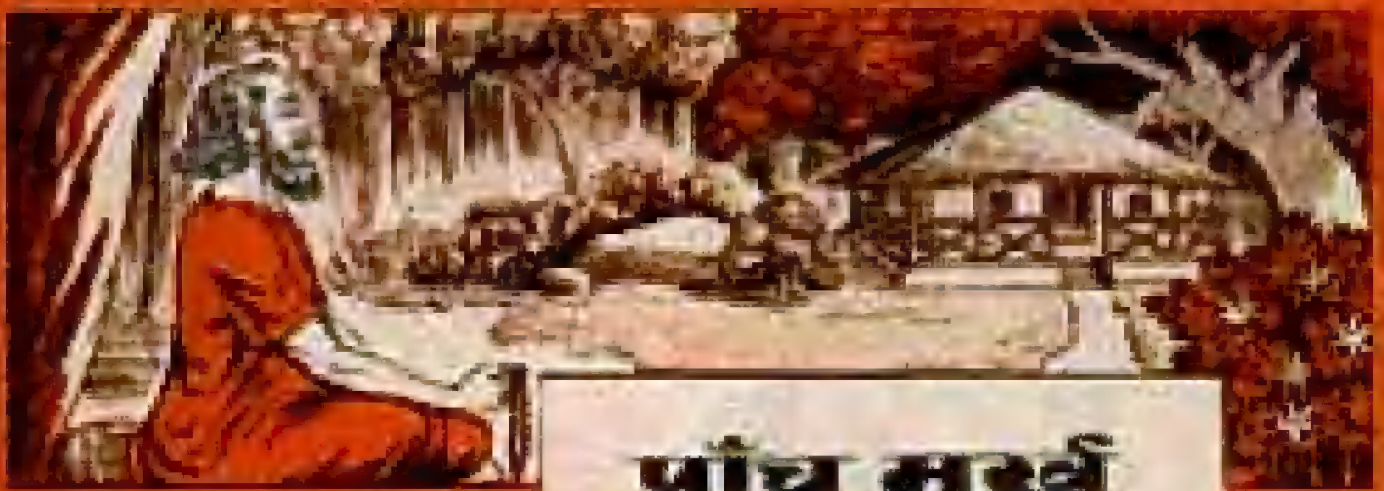
बाबल ने अब पूछा कि जो युवक ने सब कह दिया।

"महाप्रभु, मेरा पिता बहुत अकुलान्त है। मुझे बड़े पैसा से देखाता था। परन्तु उसको मार कर डाले हैं, मैं "पछि पति" पारी में डूबने गया। उसी पारी की रानी है बहुत बड़ी, मैं राजा का राजा है। राजा को राजा देने गये। यह देना मैं उन्हें पारी में न डूब सका और उनकी पर जाकर उनकी रक्षा कर रहा हूँ। उसी मन्दिर पर ही मैं राजा की रानी बनाया था, और जब शीघ्र के छेद करने का उपाय भी उन्होंने बताया था।" युवक ने कहा।

यह सुनते ही राजा का मन बहुत हुआ। उसी दिन उसने अपनी आज्ञा यह कर दी। तब मैं "पछि पति" को पुनर्जन्म लक्षणकर लक्षणपूर्वक बनाया जाता है।







## पाँच मूर्त

कुम्भनी नगर के राजा के मर जाने के

बाद उसके सबसे मेधावन्त ने अपना राज्याभिषेक करवाया। वह राजा बन गया, नाम ही मेधावन्त था। जैसे वह था विस मूर्त। उसका बचन का एक निष्ठ था, जिसका नाम सुबुद्धि था। वह भी अपने नाम के अनुरूप न था। क्योंकि उसमें भी बुद्धि न थी।

मेधावन्त की मुख्य राखी अपने नाम के अनुरूप थी। उसका नाम सन्देही था और उसे हर बात पर सन्देह होता था।

युव राजा के एक सन्तर्प मन्त्री था। उसका नाम गुणपात्र था। मेधावन्त के राजा होते ही, उसने सोचा कि राज्य के अच्छे दिन, अच्छी परम्पराओं सब युव राजा के साथ ही बने गये थे। गुणपात्र ने

अपने मन्त्री पर से त्यागपत्र दे दिया। वहीं दूर एक जंगल में एक आश्रम बनाकर उसमें भगवान का ध्यान करता निश्चिन्त रहने लगा।

गुणपात्र का बड़ा बाना मेधावन्त के लिए अच्छा था। यदि गुणपात्र का मन्त्री रहता, तो वह अपनी इच्छानुसार कुछ न कर जाता। उसने अपने बाल निष्ठ, सुबुद्धि को मन्त्री बनाया और वह मनमानी राज्य करने लगा। राजा मन्त्री निकलकर जो काम करते उस पर इतना ही ध्यान देता करते। उनकी बेमन्त्री पर वे उनकी पीठ पीछे हँसा भी करते।

एक दिन जब मेधावन्त घर पहुँचा, तो उसकी पत्नी सन्देही एक सन्देह लेकर रति के कमरे आयी।





“क्यों की मूर्ख किन्हे कहते हैं : वे कैसे होते हैं : अब आप इनकार में थे, तो किसी का “मूर्ख” और “मूर्खी” कहकर बीमना सुनाई दिया।” सन्देशी ने कहा।

“मूर्ख तो, मैंने बहुत बार सुना है। पर मूर्ख कैसे होते हैं, वह मैंने नहीं देखा है। वह बात सुशुद्धि से पूछो, वह बतायेगा।” मेधावन्त ने कहा।

अगले दिन दरबार में सुशुद्धि को देखते ही मेधावन्त को सन्देशी का सन्देश बर ही आया। उसने सुशुद्धि से कहा—

“महामन्त्री, जो मूर्ख कहलाये करते हैं, वे कैसे होते हैं, मैं वह जानना चाहता हूँ, बताओ।”

“महाराज, मैंने भी मूर्ख और मूर्खी शब्द तो सुने हैं। पर वे कैसे होते हैं। वह कभी मैंने नहीं देखा है।” सुशुद्धि ने कहा।

“पच्छा, तो तुम्हें सलाह यह का समय देना है। इस बीच कहीं मे पाँच मूर्खों की परकपर काओ : वे कैसे होते हैं, हम सबकी देखना है। इस समय में यदि तुम पाँच मूर्खों को न लाये, तो तुम्हारा तिर करवाकर कछेकी पर लटक दिया जायेगा।” मेधावन्त ने कहा।

सुशुद्धि वह सुनकर हर गया। मूर्ख कैसे होते हैं और कहीं रहते हैं, वह नहीं जानता था। इसलिए वह वह भी न जानता था कि वे कहाँ रहते हैं। यदि पछिचा मन्त्री गुजराल होता, तो वह काम मिनटों में कर देता।

गुजराल का नाम याद आते ही, सुशुद्धि की जान में जान आयी। तुरत वह मरनी की बिना दरवाह किने,



गुलबाल को देखते निरंक बहा। उसके आकर्म में रहेंबर गुलबाल को भारी बात बतायी। “इस बीच मुन्नी को दुनने का काम भाव ही को करना पड़ेगा, मारी तो मुन्नी बार रिमा आवेगा।” का उसके पैर पडा।

“कोई बात नहीं बेहा, मैं भी तुम्हारे साथ बाहर आवेगा। इसे तो मुन्नी बारिष मायू के गाने में ही निरंक आवे।” बारिष गुलबाल मुन्नी को साथ लेकर लक्ष्मणी को भोग कर बहा। जब वे एक साथ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि

एक का एक तरफ में एक गहा का और परावने का पाँच, इस लोगों को आम बुझाने के लिए बुझाना तो भजन का भजन के दूसरी तरफ में एक गहा का था।

गुलबाल ने उसे देखकर पूछा—“अरे जब पर एक तरफ जका का गहा है, तो दूसरी ओर ही क्या बहा रहे हो?”

“क्या मैं इनका भी नहीं जानता : माय कोई मरदान लखन होने है। परने है, इसका अपने ही जीवन—यदि आज में आज निष्ठा ही गई, तो बसना लखन ही आवेगा।” परावने ने कहा :







“हम राजधानी की ओर जा रहे हैं, क्या हमारे साथ आओगे—तुम्हें राजा से इनाम दिलाया देंगे।” गुणपाल ने कहा।

पर अकालेश्वर इसके लिए मान गया और उनके साथ चिपक गया।

तीनों चलते-चलते एक और गाँव में पहुँचे। वहाँ एक आदमी, अपने घर से कुछ दूरी पर के कुँये से पानी बाहर, अपने आँगन के कुँये में डाल रहा था—  
कामद यह अपना कुँआ, रू भरना पावता था।

“और माँह, क्यों एक कुँये से पानी निकालकर, दूसरे कुँये में डाल रहे हो।” गुणपाल ने पूछा।

इस पर उस आदमी ने कहा—“और क्या बिना जाये। इस शरमी के घरवा हमारे घर का कुँआ सूख गया है। मेरी पत्नी बड़ी आलसी है। पानी खाने के लिए घर से बाहर नहीं आयेगी। इसलिए और क्या करूँ। दूर के कुँये से पानी बाहर, घर के कुँये में डाल रहा हूँ।”

“हम राजधानी जा रहे हैं। क्या हमारे साथ आओगे। राजा से तुम्हें अच्छा इनाम दिलावेंगे।” गुणपाल ने कहा।

यह आदमी भी इसके लिए मान गया और उनके साथ चल पड़ा। जब वे राजधानी के पास आने लगे, तो सुनुहि ने गुणपाल से पूछा—“हम बी मूर्ख ही तो से जा रहे हैं—राजा ने तो पाँच बूजों को खाने के लिए कहा था।”

“इतनी बड़ी राजधानी में बूजों की क्या कमी है। बाकी हमें बड़ी मिल जायेंगे। पाँच बूजों को राजा को दिखाया मेरी जिम्मेवारी है...टीक।” गुणपाल ने कहा।



दोनों मूर्तों को साथ लेकर सुबुद्धि और  
जुगनाथ राजा के दरबार में पहुँचे।

मेधावन्त ने सुबुद्धि को देखकर कहा—  
“जो, इसकी जल्दी जा गये। पाँच मूर्तों  
को लाने की कड़ा बा, मगर तुम तो तीन  
ही लाये हो। जरे, वे पुराने मन्त्री ही लाए  
होते हैं। क्या वे भी मूर्त हैं।” दरबारी  
सब हँस पड़े। सुबुद्धि ने धबगतते हुए कहा—

“महाराज, मैं उनकी छात्रा से इन दो  
मूर्तों को पकड़कर लाया हूँ।”

“मगर तीन और मूर्तें नहीं लाये हैं,  
तो क्या इसके लिए इनका क्या कष्ट

दिना जाये—क्यों।” मेधावन्त ने गुस्से  
में पूछा। “महाराज जान जिन पाँच मूर्तों  
को देखना चाहते हैं, मैं उन्हें दिखाता हूँ।  
पहिले इन दोनों के बारे में तो सुनिये....”  
कहकर, उसने पर ऊबनेवाले के बारे में  
और वाली कापर कुँवे में बाँधनेवाले के  
बारे में सविधान बताया।

जब वह उनकी मूर्तता के बारे में  
कहा रहा था, तो दरबारियों ने ताकियाँ  
पीटकर जहदास किया।

मेधावन्त को यह सितुल न आया।  
उसने जुगनाथ से कहा—“सैर, इसकी बात





हो: कीजिए। बाकी तीन मूर्तों को, मन्वी ही दिलाइये।”

“इन तीनों को आप जानते ही हैं। आपने कहा कि तीन मूर्तें एक ही हैं और वह ठीक उतर न है, शायद और स्वयं मूर्तों को शोध ही न गया। मेरी गलतफहमी से आपका नामक महामन्वी ही एक कर्म है। आपकी रानी एक और मूर्त है, जिन्होंने यह कहा था कि मूर्त कैसे होते हैं और उनके पूजने पर जिनने अपने महामन्वी को मूर्त छोड़कर जाने के लिए ही न कहा, बल्कि यह धमकी दी कि अगर वे एक सप्ताह में न खाये मर्गे, तो फिर कष्ट होगा, उनसे कहा मूर्त इस संसार में कोई न होगा।” गुणधाम ने कहा।

पर जब वे एक एक साथ निकला जाता था, तो दरबारी तालियाँ पीटने आते थे।

फिर उन्होंने “महामन्वी गुणधाम की मर्ग” का अभ्यवपण किया।

महामन्वी को गुणधाम की मर्ग मूर्तपर बड़ा मुग्धा था। पर वह देख कि इरादों ने उनकी तरह, उनकी पत्नी और मन्वी को भी मूर्त कराने दिया था, गुस्सा बहुत आ, उसने कहा—“आपने जो कहा है, उसे इस सचाई महसूस है। मैं मानता हूँ कि आप फिर मन्वी पर स्वीकार करें और मुझसे ठीक तरह बातें करावाये।”

“वे महामन्वी ही गया है। मैं क्या कहा करेगा इस मन्वी पर का। वह जानना छोड़कर कि मूर्त कैसे होते हैं—यह जानिये कि मूर्तता क्या होती है और इस प्रकार राज्य कीजिए कि यका सुखी हो।” पर वह आ, गुणधाम अपने नामक कहा गया।







## रास्ते में प्यास

एक बार पञ्जाब का रहना था, वह एक पत्नी की मरने की बीमारी फैलने लगी। दो रोज बच्चे न कुछ खाते, न सोते कूदते ही, बच्चे से बड़े रहते। तीसरे दिन ज्वर आता। और तीन दिन के ज्वर के बाद बच्चे मर जाते।

इस ज्वर की चिकित्सा करनेवाला वैद्य उस गाँव में कोई न था। उस गाँव दूर जिकपुर में रहनेवाले बहुरूप मान का वैद्य था जो ज्वर की चिकित्सा का सम्झता था। पर उस वैद्य को जाने में सर्व अधिक होता था। जो वह सर्व न उठा सकते थे, वे बच्चों को जिकपुर ले जाते, वैद्य को दिखाकर रद्दी ले जाते। बच्चों को बिना देखे, वैद्य दवा न दिया करता था। ज्वर आने से पहिले ही चिकित्सा करनी होती

थी। ज्वर आने पर किसी दवा का ज्वर न होता था।

एक दिन ऐसा लगा, जैसे पञ्जाब के लड़के की ज्वर आनेवाला हो। पञ्जाब की पत्नी ने तुरत बच्चे को बहुरूप के पास ले जाने के लिए कहा। परन्तु उसके पास उस समय अपनी गाड़ी न थी। किसी और को अपने बच्चे को वैद्य के पास ले जाता था उसको पञ्जाब ने अपनी गाड़ी दे दी थी। इसलिए पञ्जाब ने वैद्य को अपने घर बुलाकर बच्चे को दिखाया था।

इतने में बहुरूप के दोस्ताने में आकर कहा—“पञ्जाब जी हमारे लड़के की वह ज्वर आना महम होना है। वैद्य के पास से जाकर उसे दिखाया है। क्या अपनी गाड़ी बरा दोने?”





पञ्चालक ने कहा कि उसके सामने भी वही सन्तान थी। "तो बच्चे, बैच भी ही पुत्र्य लगे।" सोमलाल ने कहा।

पञ्चालक भी खुश हुआ कि उसको साथ मिल गया था। दोनों शिष्टपुर की ओर चले। कुछ दूर जाने के बाद सोमलाल ने कहा—“यदि इस सड़क सड़क गये, तो वृक्ष पीत लव फलदा है। यदि पहाड़ की कगड़ोरी से गये दो मील बन होंगे।”

“तो बच्चे, समझती से ही चले।” पञ्चालक ने कहा।

इसने मैं सड़क पर एक थोड़ा गाड़ी उसको चार करके तेजी से गई। उसे एक पुत्र्य चला रहा था। एक पुत्र्य गाड़ी में बैठी थी। गाड़ी ज़बरदस्त दूर न गई थी कि रुक गई। गाड़ी में बैठी भी चिल्लाई—“सड़क करो, सड़क करो।” वह शान्त निर्जन-स्त था। दूरी पर कुछ सोचदिखी थी। बारिशान्त सुनते ही पञ्चालक गाड़ी की ओर जागा और सोमलाल उसे देख लिया। पञ्चालक ने जाकर भी देखा, तो गाड़ी हाँफनेवाला पुत्र्य लाला छोड़कर गाड़ी में झुककर, छाती पकड़कर कराह रहा था। “प्यास, प्यास।”

“मेरे मेरे पति हैं। सन्तान लकीरत बिगड़ गई। चलने समय जो भोजन किया था सन्तान उसने कोई लवाची भी। पेट दर्द बनाया। प्यास मिटाने के लिए छोटे में पैसे जनी गला। पर गाड़ी दिखी और साग पानी नीचे डुलक गया। यही नहीं गाड़ीवाले से झगड़कर लव गाड़ी चलाते आ रहे हैं। यदि वह होता, तो थोड़ा पानी ले जाता। आप जरा इस छोटे में मेहरबानी करके पानी ला दीजिये। कभी आपका पहचान न पहुँची।” गाड़ी में बैठी भी ने पञ्चालक से कहा।



“हमें जल्दी जाना है।” सोमलाल ने उसकी तरफ दिखाया। परन्तु पन्नालाल ने उसकी न सुनी और लोटा लेकर दूर जिलाई देनेवाले मन्दिर की ओर भागा।

“बाबू, तुम्हारे साथ क्या कड़ी बाधल है।” वह सोचकर सोमलाल ने कहा, “अच्छा तो मैं जा रहा हूँ।” वह वह कहकर पगडण्डी पर बैठ दिया।

पन्नालाल बाबू की तरह भागा भागा गया। दूबारी के घर से पानी लेकर गाड़ी के पास वापिस जा गया। मुन्ना की लबीकल पानी पीकर कुछ सुपरी। परन्तु उसका पैर दर दर कम न हुआ। उसने गाड़ी में ही बैठकर कहा—“अब मैं गाड़ी नहीं चला सकता।” वह शिवपुर जमीन्दार का कहवा मा। वह अपनी पत्नी को उसके भावों से अपने घर ले जा रहा था।

“आप आराम कीजिए। मैं गाड़ी हीफकर आपको घर पहुँचाकर फिर अपना काम देखूँगा।” पन्नालाल ने कहा।

“इससे कड़ी आराम काम तो नहीं बिगड़ जायेगा।” छोटे जमीन्दार की पत्नी ने पूछा।



“यै शिवपुर में रहनेवाले चक्रीय के काम ही जा रहा है। मेरे लड़के को साफ़ बिक ज्वर हो गया है।” पन्नालाल ने कहा।

“हम भी चूँकि शिवपुर जा रहे हैं। इसलिए आपको कोई आरुविधा न होगी।” उसने कहा। पन्नालाल लेटी से गाड़ी चलाकर शिवपुर गया और गाड़ी जमीन्दार के घर रोकी। जमीन्दार का कहवा पत्नी के साथ गाड़ी से उतरा और उसने एक चौकर को बुलाकर कहा—“इन्हे चक्रीय के घर से जानो। बैप को इनके साथ इनके घर ले जाओ और वहाँ काम खतम



ही जाने पर फिर बैच को उनके घर छोड़कर आयी।”

उसी गाड़ी में पन्नालाल बच्चू बैच के घर गया। जमीन्दार की गाड़ी अपने घर के सामने खड़ी देख, बैच भागा भागा आया। पन्नालाल का काम जानकर रोशियों को कुछ देर ठहरने के लिए कहा, का गाड़ी में पन्नालाल के साथ निकल रहा। बैच के जाने के कुछ देर बाद सोमलाल भगा भागा बहा पहुँचा। गाने में उसे ठोकने लगी। वहीं जुम गये और उस का हलने बहा उठाकर पहुँचा, तो सुना कि बैच का में नहीं है और वे गाड़ी में बड़ी गये हैं। उसके जाने की हल्लाकार करता सोमलाल बहा बैठ गया।

हम बीच बैच पन्नालाल के घर पहुँचा। उसके लड़के को देखा। दया दी। सोमल

आदि के बारे में बताया। फिर पन्नालाल बैच को सोमलाल के घर ले गया। उसके लड़के की भी चिकित्सा करवायी। बैच को जो कुछ देना देना था, उसने स्वयं दिया। काम होने ही बैच, जमीन्दार की गाड़ी में अपने घर आ गया और फिर उसने गाड़ी जमीन्दार के कहीं भेज दी।

सोमलाल ने उसे देखकर जाने गाँव और काम आदि के बारे में बताया।

“वे अभी तुम्हारे गाँव से जा रहा हैं। उनकी लड़के और आपके लड़के को भी दवा देकर जा रहा हैं।” बैच ने कहा।

सोमलाल ने सोचा कि पन्नालाल को छोड़कर जाने के कारण उसे अच्छी सजा मिली थी। वह पैर धँसीटला धँसीटला आधी रात के समय अपने घर पहुँचा।







## योग्यता की परीक्षा

भारत देश का राजा, हर साल इच्छानुसार, राजमन्त्री के रूप में शिक्षा देने के लिए आवश्यक युवकों को चुनता, अपनी नीचरी में ले लेता और उनको मन्त्री, कोषाधिकारी, नगर अधिकारी, न्यायाधिकारी और सेनापति के बीचों बीच सीखने के लिए व्यवस्था कर देता। कार्यक्रम में वे युवक, बड़े-बड़े पदों पर भाग लेंगे। परीक्षा में, गणित, गणित, तर्क, आदि सबको और जब विषय में भी ली जाती।

एक बार, राजा ने अपने महान काम सिखाने के लिए दो युवकों को चुना। एक का नाम विजय था और दूसरे का नाम विमल था। दोनों जीते हुए और लड़के शासक में माना जाने रहते थे। इसलिए युक्ति और सीखने के ज्ञान में, दोनों अधिक

अच्छा था, वह जानने के लिए मन्त्री ने उनको एक परीक्षा दी।

उन्होंने विजय और विमल को, एक एक टोकरा दिया और दोनों को, एक एक गांव जाने के लिए कहा और उनमें तर्कवाद की कि वे फलाने फलाने अपनी को दे दे और उनमें उनकी मर्जी ले ले। उन्होंने यह भी कहा कि वे गांव उतने दूर न जायें।

मन्त्री के काम पर, विजय और विमल बहुत-बहुत राखी पर गये।

विजय, मन्त्री के बताये गये घर दुपहर तक रुकना रहा। जिस गांव में पहुँचना था, वह जो घर जाया ही नहीं, उस रास्ते में और कोई गांव भी न जाया और पूरा मन्त्री का रही थी। घर में मूल काम





रही थी। शीमाय से उसे रास्ते के पास एक बावड़ी दिखाई दी। वह उसने उभरा। ठंडा पानी पीकर, हल सुँद पीकर, ऊपर आकर, एक पेड़ के नीचे बैठकर, वह सोचने लगा कि क्या किया जाये।

इतने में, उसे रास्ते पर कोई आता दिखाई दिया। उसने उससे पूछा कि कहीं गाँव चित्तनी नुर था। सुर्मास्त तक पहुँच जाओगे, उसने बताया, जब उसने पूछा कि पास कोई गाँव था। तो उसने कहा नहीं।

बिमत को कन्वी पर मुल्ता लाया। जब एक दिन के दूरी के गाँव मेगा है, तो रास्ते में क्या उसकी मौजब की जलमया मही बननी थी। वह सोच कि कहीं उसका मौजब भी टोकरे में न हो, उसने टोकरा लेकर देखा।

उसमें कुछ मटरियाँ थी, उस पर एक कागज था, उस पर वह लिखा था।

“इस टोकरे में ३०० मटरियाँ हैं। इसकी घाबि की गृचना कीजिए।”

बिमत ने यह सोच कि कहीं ये अधिक न हो, उसकी निपटार देखा, गिनती ही थी, एक भी अधिक न था।

“जो कन्वा की सिखा ले रहा है, क्यों उसकी मटरियाँ होने का ज्ञान देता है वह कन्वी। वह तो निष्ठता भी नहीं जानता।” सोचकर बिमत टोकरे में से पन्द्रह मटरियाँ लेकर ला गया। बिमत का कन्वात था कि अगर रास्ते में मूल से पन्द्रह मटरियाँ माली, तो क्या मन्वी उसका बला मोट देगा।

मूल के मिट जाने पर, मकान दूर होने पर बिमत चकला-चकला, उस गाँव में पहुँचा, वहाँ उसे पहुँचना था। कन्वी ने



जो मठरियाँ बेची थीं, उनके बर्त देकर,  
उन्से ३८५ मठरियों की रसीद लेकर  
बला जाया ।

दुसरे गाँव के सिन्धु जो निकला था,  
वह बिजय भी दुपहर तक चला रहा ।  
जब उसे माफस हुआ कि वह काम  
तक उस गाँव तक न पहुँच सकेंगा,  
तो उसके सामने भी गुल्ल की समझ  
जायी ।

उसने सोचा कि मन्त्री का भोजन के  
पारे ने कुछ न बढ़ाया भी शास्त्र परीक्षा  
का एक भेन था ।

बिजय ने भी बिजय की तरह, वह  
सोचकर कि शास्त्र अपना भोजन टोकरे में  
ही था, टीकरी सोलकर देना । आने की  
बर्त कागज था—३०० मठरियों बेची जा  
रही हैं, इनके मिलने की रसीद है : टीकरी  
में मठरियाँ जब गिनी, तो उनमें टीक ३००  
मठरियाँ थीं । एक भी गवाह न थी ।

बिजय चक्रमन्द था । उसने एक एक  
कटरी निकाली और उसके ऊपर वह माग  
हीकर, बाहर रखने लगा । जब उसको  
इस तरह बरफी मठरियाँ मिल गईं, तो  
उन्हें खाकर, राज के ताल्लु में पानी





पीकार—फिर बल्लभ-बल्लभ सम्मन्धान का महसूसों की तरफ देस वह लुप्त  
 पहुँचा। तिनका देना था, उनको दोषों हुआ। फिर भी उसने उनके अधिक  
 देख, सीढ़ ले की कि १०२ महसूसों इन को जानने के लिए एक और  
 मिली थी। तिनक के लगे हुए वह में परीक्षा रही।

२८५ महसूसों की सीढ़ ही थी।

“सुन्दर महसूसों बना हुई।” मन्त्री ने  
 तिनक से पूछा।

“रामने मैं मुझे भूल लगी और मैंने  
 अपने मन के लीर पर उनकी के बिना।”

“बना लेने में कोई गलती नहीं है।”  
 मन्त्री ने कहा। तिनक की नीन सी

उसने उनके लिए की सादर तैयारी  
 करवाये और उनमें की पात्र सम्बन्धों।  
 फिर तिनक और तिनक की मुलाकात कहा—

“दोनों बाहनों में दो की पात्र हैं। दोनों  
 में ही राम है। हमने मैं एक पात्र  
 अपनी राजा की और दूसरा पात्र  
 राजा की देख हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का  
 और हर करके आया।”





विमल ने अंग राज्य और विजय ने  
जबन्ती अगर जाने का निराश किया । विमल  
अंग की राजधानी में गया और उसने यह  
कहकर कि मालव राज्य में वह भेंट लेकर  
गया था, राजा के दर्शन किये । उसने  
राज्य का पात्र उसके सामने रख दिया ।

॥ कथा हि सा ॥ ॥ अंग सखा है पुता ।

\* गायत्री \* विमल ने कहा ।

“इस दीप को पैदल में बाल दो।” पास गया। वह जल्द ही जान गया कि राजा चित्ताभा। मन्त्री ने राजा को रोका। मन्त्री ने उसकी परीक्षा के लिए ही यह उसे बताया कि हिमालय को वह बाध करके काम प्रोत्साहित था। इसलिए उसने ईश्वरका माध्यम का मन्त्री था और वह रास्ते में ही सोच किया कि कैसे वह राज

वही गीष्मा के लिए आकाश हुआ था वह  
आनन्दर विमल थे कहे—“तुन अपने  
बाप को लेकर चले जाओ । मन्त्री से कहना  
कि हमसे उसे लेने से इनकार कर दिया है ।”

विमल की ज्ञान प्राप्ति प्राप्ति कभी । वह  
असह्य माझी पर सकार हो गया और राज  
का काम तेजस्य साधित बल बढ़ा ।

इस बीच विजय भी मन्नड़ी राजा के पास गया। वह जल्द ही जान गया कि मन्नड़ी ने उसकी परीक्षा के लिए ही यह कठिन काम सौंपा था। इसलिए उसने रास्ते में ही सोच लिया कि कैसे वह राज





का पाव, जिस प्रकार भवन्ती के राजा को भेंट करेगा।

भवन्ती राजा ने वापस कर के कहा—

“महाराज, मैं सात्वत देश से एक छोटी भेंट लाया हूँ। हमारे राजा और मन्त्री ने अपनी बहुत कामनाएँ मन्त्री हैं। और इस पाव के मन्त्र को आपको देने के लिए कहा है। हाथ ही ने हमारे राजा ने कहाँ कहाँ की और कहाँ कहाँ कहाँ किया। यह उस यज्ञकुण्ड की मन्त्र है। यह मन्त्र सूर्य मंत्रों का निवारण करेगी। आपकी और आपकी मन्त्र को स्वाभ्यन्तर और ऐश्वर्य प्रदान करेगी। आपने और उसमें वैश्वपूर्ण सम्बन्ध करें, इस दृष्टि से आपके पास यह भेंट मन्त्री है।”

भवन्ती राजा बड़ा खुश हुआ। उसने उस पाव को अपने अन्तःपुर में भेंट दिया।

विजय का उसने आश्रय किया और जब वह वापस जाने लगा, उसके लिए सात्वत के राजा और मन्त्री के लिए बहुत-से उपहार भेजे।

विजय तब तक राजा का राजा लेकर वापस आ गया था। उसने मन्त्री को देखकर कहा—“यदि राजा की नौकरी इतनी दिखती और बड़बुदाइयों से भरी है तो तुम्हें छोड़ दीजिये।” यह कहकर वह अपने गाँव चला गया।

फिर विजय ने आकर राजा और मन्त्री को भवन्ती राजा के दिने हुए उपहार दिने और बताया कि कैसे वह सच्चिदानन्दक वस्त्र का आकाश था। फिर उसने कहा—

“महामन्त्री! जब और क्या करीखा है?”

“कोई नहीं, आज ही तुम नौकरी में जा सकते हो!” मन्त्री ने कहा।







## युद्धकाण्ड

सुग्रीव ने लक्ष्मणों को कहा कैशिक  
 काटकर एक लक्ष्मण ने राम के पास  
 चला गया, जो कुम्भकर्ण राम से कथक्थ  
 में पड़ा। जो तरह कुछ देर गड़ा मड़ा फिर  
 कुछ गुमि हो चला गया। उसे जाने जाने  
 मरना मरना कि उसके हाथ में कोई  
 हाथपाश न था। जाने मरने में एक  
 बरसका लड़का हो गया।

कुछ गुमि हो वह गुमि में हो कुंठि  
 दिखाने देता, जो लाल लाल। कुम्भकर्ण  
 ने वह को न जाना कि वह लाल के  
 साथ मरने को ही निकल रहा था।

कहा राम लाले दुखका लाले लाले,  
 जो कुम्भकर्ण लाले पीड़ा करने रत्नाओं  
 को लक्ष्मण ने बाहर लाया था।

उस दिन लक्ष्मण ने कुम्भकर्ण को  
 दुखका लाले लाले लाले लाले लाले  
 मरना लाले लाले लाले लाले लाले  
 मरना लाले लाले लाले लाले लाले  
 मरना लाले लाले लाले लाले लाले  
 मरना लाले लाले लाले लाले लाले

राम ने एक लक्ष्मण मरना लाले लाले  
 लाले लाले लाले लाले लाले लाले  
 लाले लाले लाले लाले लाले लाले  
 लाले लाले लाले लाले लाले लाले  
 लाले लाले लाले लाले लाले लाले  
 लाले लाले लाले लाले लाले लाले





कुम्भकर्ण फिर न उस लड़ाई, यह  
जो न अन्त में जाना की जब यह लड़े  
जाने के लिए जाता : फलतः उस लड़ाई  
को कुम्भकर्ण ने जीता था और  
हता विषा ।

जब ऐसा सब कुम्भकर्ण के पास आये ।  
कुम्भकर्ण दौड़ की तरह दौड़ता लड़ता सब  
के पास आया ।

तब तो जो देखता करता : "कुम्भकर्ण  
जो न । आओ, तुमने इस को जीता  
का न, मैं इस लड़ाई में जीता हूँ । मैं  
तुम्हें एक धर में नष्ट करूँ ।"

... और कोई विचार नहीं है : न  
नवम्ब, न नवम्, न पारो, नारीन, नौ,  
कुम्भकर्ण है । देखो, इसका सब विचार  
है । उनके बाद मुझे लग आयेगा ।"  
कुम्भकर्ण ने कहा ।

तब इस लड़ाई का कुम्भकर्ण का कुछ  
न विचार : यह है : वे सब को जान लूँ  
को मत पड़के लड़ती को लगे थे, कुम्भकर्ण  
पर लगे गये । जब लड़ता इस तरह  
जाना जाता कि सब के सब लड़ाई से  
ही लड़ता गया ।

जब सब ने कुम्भकर्ण पर आक्रमण का  
प्रयोग किया । इससे कुम्भकर्ण का पद  
काट काट दिया, जिससे उसने भूभाग  
दौड़ रहा था । कुम्भकर्ण फिर ने लड़ता  
जब लड़ता साथ साथ, तो उनके लिये  
कई तरह लड़ता लड़ गया ।

एक साथ के लड़े लड़े सब, कुम्भकर्ण  
ने लड़ा लड़ा के एक लड़ता लड़ता  
सब पर लड़ता किया ।

तब ने लड़ता ने लड़ता के लड़ाई  
का को लड़ा दिया ।

इससे फिर के अब लड़ता लड़ाई से  
कुम्भकर्ण के लड़ाई लड़े



[illegible][illegible]

सारे के लिए दूसरी हीं मरन की  
 स भगवान् देवता देवता, मरनका, देवताका,  
 मरनका, मरनका, मरनका, मरनका  
 मरनका मरन के लिए मरनका है।

पैसा हाथ में लेकर गंगा में नदी में नदी में  
गंगा होने का । गंगा के बीच में  
में गंगा गंगा और गंगा में गंगा  
में गंगा ही गंगा में गंगा  
। गंगा में गंगा ही गंगा में गंगा  
में गंगा ही गंगा में गंगा

अनार के अरामक के बचने लक्ष्य  
पहल "हम बचने के अरामक कलम



५२ वर्षीय इत्येवम् । १९७३-७४ : १९७३-७४  
५३ वर्षीय इत्येवम् । १९७४-७५ : १९७४-७५

[illegible]

“महोदय, इसमें तो इतना बड़ा है।” बर्बन्त  
होकर, अगले में लगे लड़के को धक्का मारकर  
छाड़ी पर गिरा, वह लड़का उठकर दूर भागा।















कुड़चूँ में अपने गंध के चरने और  
राक्षसों का पदम मलमल कुड़चूँ में डाल  
करा और एक काली बाली को बंधे  
को ली। बिना बिना के आजने उल्लस  
जकि बिना ही मूलक ही

आज कुड़चूँ में उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस और उल्लस ही उल्लस उल्लस ।  
मर के उल्लस के बाल, उल्लस उल्लस उल्लस  
और उल्लस के बाल उल्लस के उल्लस  
ही उल्लस ।

राक्षस उल्लस के उल्लस उल्लस के  
मर कुड़ के उल्लस उल्लस उल्लस

उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस के उल्लस  
उल्लस उल्लस ।

मनुज उल्लस और उल्लस उल्लस, उल्लस,  
मनुज, उल्लस, उल्लस, उल्लस, उल्लस,  
उल्लस, उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस के उल्लस ही उल्लस ।

कुड़ उल्लस ही उल्लस के उल्लस उल्लस ।  
उल्लस उल्लस ही के उल्लस उल्लस  
के उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस

कुड़ उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस—" उल्लस उल्लस के उल्लस कुड़ उल्लस

उल्लस उल्लस उल्लस की उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस । उल्लस उल्लस के उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस

उल्लस उल्लस के उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस के उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस  
उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस उल्लस









होने से बड़े गुड़ से ही " अनीसम  
से गुड़।

" गुड़ हि ही कि अनीसम से बड़े से  
बड़े गुड़ है - लाल है। सुन्दर, दृढ़, लाल  
मर्द है, जो बन्दर सेना बन्दर से है।  
मर्द अनीसम से लाल से बन्दर सेना मर्द,  
जो अनीसम सेना से लाल सेना है। एक  
मर्द दृढ़, लाल सेना है, लाल सेना से लाल  
मर्द से लाल है " अनीसम से लाल

हनुमान से ही से बड़े गुड़ सेना से  
अनीसम से लाल सेना, अनीसम से  
परीसम से लाल सेना। अनीसम से लाल  
मर्द से लाल सेना से लाल से लाल  
मर्द से लाल सेना से लाल से लाल

" बेटा, अनीसम से लाल सेना से  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल

है : जो लाल सेना से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल  
लाल सेना से लाल से लाल से लाल

अनीसम से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल

लाल से लाल से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल  
लाल से लाल से लाल से लाल से लाल







## कथमांगद

कुशी स्वामंगद नाम का राजा हुआ करता

था। उसकी पत्नी का नाम मन्ध्यावती था। उनके एक लड़का था, जिसका नाम मंगमंगद था। स्वामंगद बड़ा भीषण और बड़ा विष्णुभक्त था। उसका विचार था, कि एकदशी का मेला सब बाद वाले जन्मे में। यदि अपनी राजा को मरवा के उस से बचाना है, तो एकदशी का करना ही एक मात्र मार्ग है। इसलिए स्वामंगद ने योजना करवाई कि हर कोई उसके राज्य में एकदशी का मेला और जो न मेलेंगा उसको दण्ड दिया जाएगा।

स्वामंगद के इस नियम से राजा ने नरक बना कोड़ दिया। नरक उल्टा-सा गया। विष्णु का भी काम न रहा। कम लोग ही गए थे कि यह बेकार ही

गया था इतने में नारद ने भाकर कहा—

“कल बात है, सब राजा, बड़ी चिन्ता में हूँ हुए ही!”

“नारद, देखो, मेरे लोक की क्या गति है! चूंकि स्वामंगद लोगों में एकदशी का मेला करा रहा है इसलिए माझन हत्या करनेवाले भी मरने जा रहे हैं। विष्णु का भी जीवन ऐसे खाली बैठ रहा है। मैं भी बेकार बैठा हूँ। जब काम ही न हो, तो यह कद किस काम का। सारी परिस्थिति में उस ब्रह्म को ही बचाना।” कम ने कहा।

नारद सब राजा को अपने पिता के पास ले गया, वहाँ दरबार में था। सब को देखकर ब्रह्मा के बालों और लंबे लोम कावस में कामाक्षी काने लगे। कम





रोता लम्हा के पैरों पर गया। लम्हा में ललकती बच गयी। बापुदेव ने सब को चुन रहने के लिए वह कम से कहा—  
“जो तुम्हारी दुरवस्था है उसके बारे में तुम लम्हा से निवेदन करो।”

“मैं व्यर्थ हो गया हूँ। मुझे अब कोई काम नहीं है। मेरी कोई परवाह नहीं करता है। जो पुण्य कटोर लम्हा या यह भारि से नहीं मिलता है, वह पण्डरशी मत से बिल जाता है। पण्डरशी के दिन कुछ उज्ज्वल लगावन स्नान करके यदि उन्नास बिन्दा मन्त्र, जो हर बिली को

ऊँचे लोक विहले हैं। जब मुझे यह मौक़ी नहीं चाहिए। अगर इसे ले लीजिये और मुझे जाने दीजिये। यह रहा मेरा वृण्ड और यह रहा सब पुण्य का जेम्हा-जोला। जब तक जो इसने लिखा होता था, उसे कोई मिटा नहीं पाता था। पर जब यह स्वर्गागद कहीं से आ पड़ा है।” अब ने कहा :

यह सुनकर, लम्हा ने अब को खूब फटकारा। “पण्डरशी मत को गेहनेवाले तुम क्यों होते हो। पण्डरशी विष्णु का प्रिय दिन है, एक बार हरि का स्मरण करने मात्र से, इस भ्रममेंथो वह पुण्य मिलता है। और, यही मनीमत है, विष्णु मन्त्रों ने, विष्णु के विरुद्ध यह कहने पर, तुम्हें भाग नहीं मैं, इस विषय में सुधारी कुछ भी मदद नहीं कर सकता।”

अब ने भी फिर डकड़ी—“बाबा, अब तक मेरी मदद नहीं करोगे मैं बारिस नहीं जाऊँगा। जब तक स्वर्गागद वह राज्य है, सब तक मेरी कोई नहीं सुनेगा। अब अगर ऐसा करो कि वह मत और मित्र के मार्ग से विचलित हो जाये। जैसे भी हो, उन्नास मत भोग कर दो। यदि तुमने



यह किया, तो एकदशी यह उपासकों के पास चली चटकुंता । ”

ब्रह्मा ने कुछ देर ध्यान किया । फिर उसने मोहिनी की की शक्ति की । मोहिनी ने ब्रह्मा से पूछा - “ मीन लोकों को मुक्त करनेवाली मुझ की को बनाने का तुम्हारा क्या उद्देश्य है । ”

ब्रह्मा ने मोहिनी को स्वर्गांगद के बारे में, उसके भजा को बनाने एकदशी नियम के बारे में और उस कारण यह की दुम्बिति के बारे में बताया । फिर उसने यह उपास की बताया, कि कैसे वह आकर स्वर्गांगद को मुक्त करे, उसका कैसे लभ भंग करे ।

मोहिनी, ब्रह्मा से आज्ञा लेकर रहने में देवताओं की देखती, नन्दर पर्यंत पर गई, उस पर्यंत पर भजापुत्र के कारण एक बड़ी फाटी-सी बनवाई थी । उसे हुए लिया बड़ा जाता था । वह बड़ा रम्य प्रदेश था । मोहिनी वहाँ एक नगर दखल पर बैठकर बीजा बजानी गाने लगी ।

एक दिन स्वर्गांगद की कानधन्य भजा पड़ा । सभी सम्पूर्ण जम्बूद्वीप पर उनका एक छत्र राज्य था । उसने समस्त पुत्रों का उत्थोग किया था । उसने अपना



सारा जीवन तो विष्णु भक्ति में बिताया ही, साथ उसने स्वर्ग में भी नीद कर दी । यह लोक की उपासना दिया । जब कोई ऐसी चीज न थी, जिसे वह चाहता हो । उसका लड़कर भर्मांगद था । वह हर चीज में निता की बात करता था । निता यदि एक हीरक का राजा था, तो भर्मांगद राजा हीरक का था । अति शक्तिसाली होने पर भी भर्मांगद अपने निता और भजा को, और निता की तीन की पत्नियों को बड़ी बड़ा और भक्ति में देखता । स्वर्गांगद अपने लड़कों का राज्याभिषेक करके उसे



भी प्रजा द्वारा एकदली मत मचाने के लिए आदेश देकर, यही से विदा लेकर, छोड़े पर सवार होकर मेह चलें जाया। जल्दी ही उनको मेदिनी का संगीत सुनते दिना। सुरत यह छोड़े घर में उतरा और जिस दिशा में संगीत आया था, उस ओर भागा भागा गया और उसने मेदिनी को देखा। उनको देखते ही, उसका मन विचलित हो गया। वह उसको पास जाकर गुफिल-ता हो गया।

मेदिनी ने बीणा एक तरफ रखी। रत्नागढ़ के पास जाकर पूछा—“राजा, उठो, तुम तो राज्य भी छोड़कर आये हो। फिर मुझे देखकर, कैसे इतने गुप्त हो गये। यदि तुम मेरे साथ भूमना करना चाहते, तो मेरे विधानानुसार शीघ्र मेरे साथ रहो।”

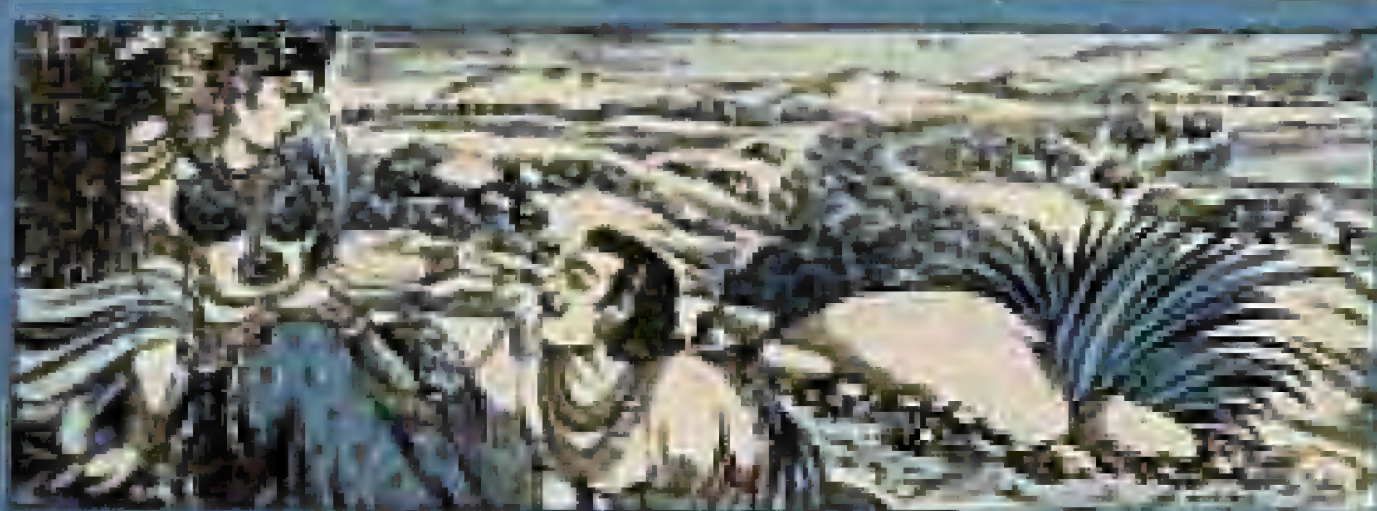
वह सुनते ही रत्नागढ़ पर आक्रमण हुआ। उसने मेदिनी से कहा—“मेरी कई सुन्दर बहनें हैं। पर तुम किसी सुन्दर भी बने नहीं सदा देखी। यदि तुम मेरी हो गई, तो जो चाहोगी, वह दे दूंगा। मेरा सारा राज्य तुम्हारा है। मैं भी तुम्हारा हूँ।”

मेदिनी ने रत्नागढ़ का दावा हाथ नकारकर कहा—“यदि यही बात है, तो मुझे विवाह कर दो, नहीं तो, जो हथारा तुम दीना, वह बंधन समझा जावेगा।

रत्नागढ़ ने उसकी इच्छानुसार शाश्वत शक्ति से उसके साथ विवाह कर दिया। “अब तुम जो चाही करो, क्या यही भूमि फिर। या किसी और पर्यंत कर पाते। या हम जाने घर चले।”

मेदिनी उसके साथ घर आने के लिए मान गई।

अभी है।





चीन के मन्दिरों में सब से अधिक पवित्र इस स्वर्गालय को १९२० में युन्ग-की सम्राट ने बनवाया था । यही सम्राट स्वयं अकेला आराधना करता था और वर्ष में तीन बार बलिर्घा दिया करता था ।







सुलभ  
परिचय

गमन की है ये शिल्पकारी !

लेखक :  
तारककुमार मुखर्जी - भाटाबादा





पुरातन  
परिचय

देखू कैसी थी प्राचीन भारत की नारी !!

लेखक :  
लखनकुमार मुखर्जी - भादवापुरा

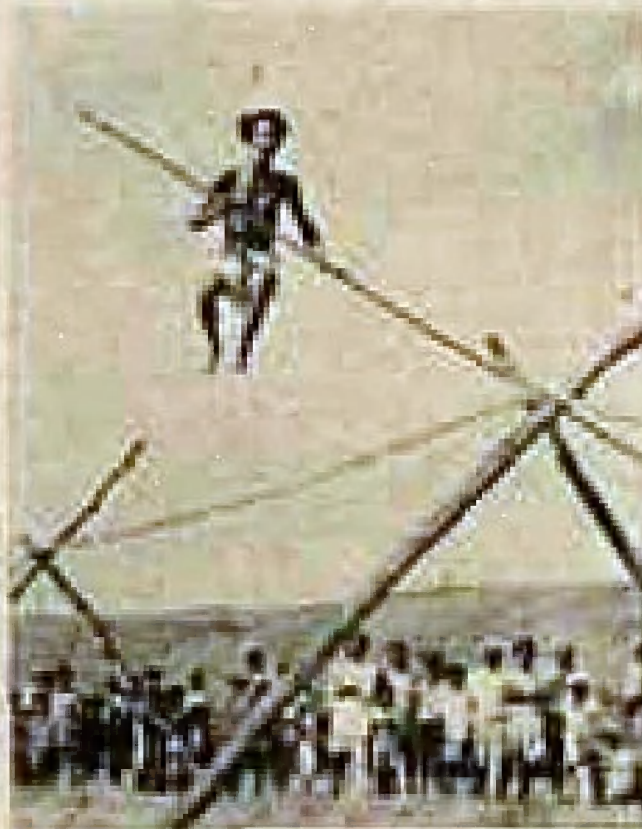


# फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९५५

११

पारितोषिक (१०)



**हृदयभा परिचयोक्तियाँ मार्च पर ही भेजें !**

अगर के फोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्ति दो तीन वाक्य की हो और वाक्य संश्लिष्ट हो। परिचयोक्ति पूरे नाम और पते के साथ मार्च पर ही लिखकर लिपिबद्ध भेजें

पर तारीख - मार्च १९५५ के अन्तर भेजनी चाहिए।

**फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता**

अन्दापामा सकारान,

बड़वल्लवी, बड़ाल-२५

**मार्च प्रतियोगिता - फल**

मार्च के फोटो के लिए लिपिबद्ध परिचयोक्तियाँ भेजी गई हैं।

इनके मेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

बहिष्कार छोड़ें। गलत की ही ये शिक्षाकारी।

दुआ छोड़ें। ईश्वर किसी भी मार्गीय भारत की नारी !!

लेख: सपनकुमार मुखर्जी,

C-० जो. सी. मुखर्जी, रेलवे स्टेशन, बाजपट्टा, बिना-रायपुर (न. २.)



# दिलीप और साथी फिल्म देखते हैं

